ISSN 2229-4066

VOL. IX, NO. 1
(जनवरी - जून 2017)

संभाष्य

उत्कृष्ट शोधपत्रों का छमाही

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अमर बहादुर सिंह

सम्पादक
अनिल कुमार पाण्डेय

Art Editor
Ajay Sharma
Mob. : 8601645354

Editorial Advisory Board
Prof. Mukteshwarnath Tiwari (Viswa-Bharti, Santiniketan)
Prof. V.N. Bhalerao (University of Pune)
Prof. Prem Shanker Towari (University of Lucknow, Lucknow)
Prof. Ravindranath Rai (Veer Kunwar Singh University, Ara)
Prof. Banshidhar Lal (Magadh University, Bodhgaya)
Prof. Naveen Chandra Lohani (Meerut University, Meerut)
Prof. Meera Gautam (Kurukshetra Univerity, Kurukshetra)
Asso. Prof. Sanjay Rai (Dept. of India Language, B.H.U., Varanasi)

© Publisher

ISSN 2229-4066

UGC Approved Refereed Journal Serial No. 48825

Sambhasya : A journal of various researches.

Note : Scholars will be answerable to the comments of their or tackles.

Cover Page : Ajay Sharma

Laser Type Setting And Printing : Hind Printing Works, Varanasi

E-mail : sambhashyabhu2010@gmail.com
: amarsinghbhu@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्रम	लेख एवं लेखक	पृ०सं०
33.	वाजश्रवा के बहाने : कुँवर नारायण की काव्यकृति में भारतीय मिथक और आधुनिकता बोध **मंगलम कुमार रस्तोगी**	191
34.	भारतीय समाज और त्रिलोचन का काव्य **प्रिया भारतीया**	196
35.	समकालीनता के निर्धारक विमर्श और समकालीन कविता **डॉ. धीरेन्द्र सिंह**	198
36.	दलित जीवन पर केन्द्रित फिल्मों का ऐतिहासिक अध्ययन **प्रदीप कुमार सिंह**	207
37.	हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना में सरहपा और सिद्ध–नाथ साहित्य **दिवाकर दिव्य दिव्यांशु और प्रो. गजेंद्र पाठक**	218
38.	भक्तिकाल का सामाजिक गतिरोध और मीरा की कविता **शिवेन्द्र कुमार मौर्य**	226
39.	जैनेन्द्र का रचनाकाल–सामाजिक एवं साहित्यिक परिवेश **डॉ0 अमर बहादुर सिंह**	232
40.	भारतीय राजनीति और जातिवाद **मिथिलेश कुमार**	239
41.	हिन्दी नवजागरण और स्त्री प्रश्न **शोभा बिसेन**	243
42.	प्राकृतिक बिम्ब के कवि : केदारनाथ सिंह **अनिल कुमार पाण्डेय**	251
43.	आदिवासी संस्कृति पर औद्योगिकरण के दुष्परिणाम और संजीव का उपन्यास **अनुज कुमार शुक्ला**	255
44.	मानवतावादी निबंधकार : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी **युवराज सिंह**	261
45.	मानता हूँ मैं पराजय है तुम्हारी याद.... **बृजेश कुमार**	265
46.	Constitutionality of Capital Punishment in India **Ramesh Kumar Bharti**	271

हिन्दी नवजागरण और स्त्री प्रश्न

शोभा बिसेन
हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

भूमिका :

समाज में कोई भी बदलाव या जागरण अचानक यों ही नहीं होता। उसके पीछे कई कारण होते हैं। कुछ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सांस्कृतिक परिस्थितियाँ होती है। हिन्दी नवजागरण भी इन्हीं परिस्थितियों का परिणाम था और इसके मूल में थी देश में अंग्रेजों की दमनकारी शासन पद्धति, औपनिवेशिक दास्तां। जो उस समय पूरे देश में व्याप्त थी। अपने निजी स्वार्थों के लिए अंग्रेजों ने इस देश में नई अर्थव्यवस्था, औद्योगिकता, संचार सुविधा, प्रेस आदि को स्थापित किया। लेकिन इससे देश का हित ही हुआ। एक स्थिर व्यवस्था से छुटकर देश को नई गति का आभास हुआ। परम्पराएँ टूटने लगी और नए माहौल में ऐतिहासिक मांग के फलस्वरूप लोग अपने को नए ढंग से ढालने की कोशिश मे जुट गए। अंग्रेजों की शासन पद्धति का ही परिणाम था कि भारतीय मनीषियों का संपर्क पाश्चात्य सभ्यता से हुआ। पाश्चात्य शिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति, पाश्चात्य आंदोलनो से भारतीय मनीषी परिचित हुए। परिणाम स्वरूप दो सभ्यताओं यानि भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यता के बीच एक प्रकार का टकराव सामने आया या यों कहे कि भारतीय मनीषियों ने सभ्यताओं का आत्म निरीक्षण करना प्रारम्भ किया। इसके फलस्वरूप एक ऐसी वैचारिकता हमारे समाज में आई कि पूरे समाज में उथलपुथल पैदा हो गई। हजारो साल पुरानी परम्पराओं, रूढ़ियों, धार्मिक भेद–भाव, जातिगत भेदभाव, वर्ण व्यवस्था, भाषायी असमानता एवं स्त्री–दलित आदि पहलुओं के विरोध पर कुछ विद्वानों ने खुल कर विचार प्रकट किए, जो एक नवजागरण के रूप में सामने आया।

नवजागरण की शुरुआत एकाएक पूरे देश में न होकर एक–एक कर अलग–अलग प्रदेशों में हुई। सर्वप्रथम नवजागरण बंगाल में आया, फिर महाराष्ट्र और उसके बाद हिन्दी प्रदेश में। अलग–अलग प्रदेशों का नवजागरण, अलग–अलग वैचारिक पक्ष, अलग–अलग मुद्दों और अस्मिताओं को लेकर आया। बंगाल का नवजागरण शिक्षा, बाल विवाह, सती–प्रथा व विधवा विवाह जैसी समस्याओं को केंद्र में रख कर एक आंदोलन के रूप में सामने आया। यहाँ राष्ट्रीयता का स्वर भी प्रमुख था, लेकिन बंगाल की सीमा तक 'आमार सोनार बांग्ला' की धारणा बलवती रही। महाराष्ट्र में नवजागरण के केंद्र में जातिगत भेद–भाव, दलित अस्पृश्यता, स्त्री शिक्षा आदि प्रमुख मुद्दे थे। हिन्दी नवजागरण का स्वरूप बंगाल व महाराष्ट्र के नव जागरण से थोड़ा भिन्न था। हिन्दी नवजागरण के तेवर व दृष्टिकोण में भिन्नता थी।

हिन्दी नवजागरण व स्त्री प्रश्न :–

हिन्दी नवजागरण की शुरुआत 1857 के स्वाधीनता संग्राम से मानी